GRT
Golden Research Thoughts
ISSN: 2231-5063 Impact Factor : 4.6052(UIF) Volume - 6 | Issue - 6 | December - 2016

दक्षिण हरियाणा के लोकगीतों में वेशभूषा

डॉ. महासिंह पूनिया[1] व यशवन्ती[2]
[1]कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय , कुरुक्षेत्र.
[2]शोधार्थी , कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय , कुरुक्षेत्र.

भूमिका:-

हरियाणा की पवित्र भूमि जीवन के विभिन्न रंगो को अपनी धूलि कणों में संजोए है। यहाँ के लोग सीधे स्वभाव के है तथा सादा जीवन व्यतीत करते है। यहाँ के लोगों के हृदय की धड़कने संगीतमयी है। उनके दुख-सुख की अभिव्यक्ति का माध्यम लोकगीत है। लोकगीतों में जीवन के आदर्श छिपे है। लोक संगीत में लोकगीत का वहीं स्थान है। जो ऋतुओं में बसन्त का, फूलों में गुलाब का व फलों में आम का है। ये गीत हरियाणा प्रदेश की रीति-रिवाजों, खान-पान, वेशभूषा, संस्कारों तथा आचार-विचार के दर्पण है। समाज के हर पहलू के चित्र इन लोकगीतों के माध्यम से हमारे सामने आते है। ये गीत जन-साधारण के सुख-दुख के संगी है। खुशी के दिन जैसे जन्म, विवाह, त्योहार, उत्सव फसलों की बिजाई व कटाई व सुहावनी ऋतुओं में ये इन्सान की खुशी को दुगना कर देते है तथा मानसिक पीड़ा तथा शारीरिक थकान को कम करने में ये लोकगीत औषधि का काम करते है। ये हमारी समूची संस्कृति के पहरेदार है। लोक शब्द का अध्ययन करने तथा विद्वानों के लोक से संबधित विचारों के विश्लेषण से स्पष्ट

होता है कि लोक समाज का वही वर्ग लोक कहलाता है। जो शास्त्रीय ज्ञान एवं शिक्षित चेतना से शून्य होते हुए कुलीन से युक्त एवं अहम् भाव से रिक्त होता है और यहीं वर्ग सतत् परम्परा के प्रवाह से जीवत रहता है।

दक्षिण हरियाणा के लोकगीतों में वेशभूषा-

''जैसा देश वैसा भेष' अर्थात व्यक्ति जिस देश में रहता है उसे उसी देश की वेशभूषा धारण करनी चाहिए। हरियाणवी की यह कहावत इस तथ्य की और स्पष्ट संकेत करती है कि प्रत्येक देश व प्रदेश की अपनी वेशभूषा होती है। व्यक्ति की वेशभूषा उसके देश व प्रदेश का परिचय करा देती है। पहनावे की छटा तब उभरकर सामने आती है जब विभिन्न प्रदेशों के लोग अपने पहनावे के साथ किसी कार्यक्रम में भाग लेते है तब वेशभूषा ही उनके प्रदेश की पहचान होती है। हरियाणा के लोगों का पहनावा बिल्कुल सादा है यहाँ के लोग 'सादा जीवन उच्च विचार' वाली सोच में विश्वास करते है। हरियाणा की वेशभूषा का वर्गीकरण इस प्रकार किया जा सकता है-1. बाल वेशभूषा 2. महिलाओं की वेशभूषा 3. पुरुषों की वेशभूषा और 4. विविध वेशभूषा।[1]

बाल वेशभूषा-

लोक में जब बच्चा पैदा होता है तब उसे जो कपड़ा पहनाया जाता है जिसे झुगला कहा जाता है। जैसे-जैसे बच्चे बड़े होते जाते है, बुशर्ट, निकर, कुरता, टी शर्ट-पैन्ट पहनते है। बचपन में लड़का व लड़की लगभग एक जैसी वेशभूषा पहनते है। दक्षिण हरियाणवी लोकगीतों बाल वेशभूषा का जिक्र होता है।

जैसे-

गौरे-गौरे गाल है घूंघर वाले बाल है।
तार-कसी का झुगला पहने कैसे सुन्दर बाल है
दाई आवै बालक जनावै माँग अपना नेग है।
सासड़ आवै थाल बजावै माँग अपना नेग है।[2]

पुरुष वेशभूषा-

हरियाणा के लोगों का पहनावा बिल्कुल सादा है। यहां के पुरुषों के परिधान के लिए 'पाँच पोशाक' शब्द बहुत प्रचलित है। सिर पर पगड़ी, शरीर पर कुर्त्ता, कमर पर धोती, कन्धों पर पर्णा तथा पैरों में जूती ये सामान्य परिधान है। दक्षिण हरियाणा के लोकगीतों में पुरूष-वेशभूषा की अभिव्यक्ति है-

मेरे चौधरी टूटी सी छानदड़ी,
हम हेली आले की नार,
चौधरी ओ बुरा मत मानइयों,
म्हारा हँसोकड़ा सुभा,
चौधरी ओ बुरा मत मानइयों,
मेरे चौधरी फटी लगोटी,
हम धोती आले की नार,
चौधरी ओ बुरा मत मानइयों।
मेरे चौधरी फटा सा कुड़तला,
हम कुड़ता आल की नार,
चौधरी ओ बुरा मत मानइयों,
म्हारा हँसोकड़ा सुभा,
चौधरी ओ बुरा मत मानइयों।

मेरे चौधरी के टूटे-फूटे लितर, हम जूती आले की नार,
चौधरी ओ बुरा मत मानइयों, म्हारा हंसोकड़ा सुभा,
चौधरी ओ बुरा मत मानइयों।[3]

हरियाणा में पगड़ी या साफा पुरूषों की शान व सम्मान का प्रतीक है। सिर से पगड़ी उतरना बेइज्जती समझा जाता तथा सिर पर पगड़ी रखना सम्मान देना होता है। त्योहार व उत्सवों पर पुरुषों सुन्दर पगड़ी व साफा पहनते है-

भेली चावल ले की रै बीरा तेरे आई।
ओछे घरा की भावजी रै बोली कोनी।
सूखी बूरा घाल दी रै घी घाला कोनी
सूथरा साफा बाँध की बीरा मेरे आइये।[4]

दक्षिण हरियाणवी लोकगीतों में प्राचीन एंव आधुनिक दोनों ही पोशाकों की चर्चा की गई है। पहले अधिकतर पुरुष पगड़ी, धोती और कुड़ता पहनते थे। धोती-कुडता का स्थान धीरे कुड़ता, पाजमा और पैंट-शर्ट व कोट ने ले लिया। द. हरियाणवी लोकगीतों में इन सबका वर्णन बहुत सुन्दर ढंग से हुआ।

केला, चमली दोनूँ मरवै कै पेड़ नीचै।
बुशर्ट तो पहनो रै बन्दड़ा बटणा पर ध्यान घर की
केला चमेली दोनूँ मरवै कै पेड़ नीचै।
पैंटा तो पहनों रै बन्दड़ा बैलटा पर ध्यान घर की।
केला, चमेली दोनूँ मरवै कै पेड़ नीचै।
जूते तो पहनो रै बन्दड़ा फीता पर ध्यान घर की।

बन्ना काला कोट सिमा रै, अंग्रेजी बटण
लगवाले रै, बन्ना पहन कॉलिज में
जाइए रै, आपको दादा का लाडला कहवाइयें रै।[5]

महिलाओं की वेशभूषा-

दक्षिण हरियाणवी लोकगीतों में प्राचीन एंव आधुनिक दोनों ही पोशाकों की चर्चा है। पहले स्त्रियां दामण पहनती थी चूंदड़ी ओढ़ती थी तथा पहनने को कुरता होता था। धीरे-धीरे साड़ी ने घाघरा का स्थान ले लिया और फिर धीरे-धीरे सलवार जम्फर-सूटों का आगमन हुआ है। दामण, कुड़ता व चुन्दड़ी का लोकगीत-

साथण चाल पड़ी ए मेरे डब-डब भर आये नैण।
अपनी साथण का मैं दामण सिमा दूँ नेफा की ला दूँ लार।
अपनी साथण का में कुड़ता सिमा दूँ बटणा की ला दूँ लार।
अपनी साथण का मैं चून्दड़ मँगा दूं घोटा की लादूँ लार।
साथण चाल पड़ी ए मेरे डब-डब भर आये नैण।

मैं काली वायल लाई ए राजमल का राज लूटण नै।
मैं धोला कुड़ता लाई ए नणदल रांद काटण नै।
मैं कन्द का दामण लाई ए छोरा की झाल डाटण नै।[6]

औरतें सजने व संवरने की ज्यादा शौकिन होती है। वे श्रृंगार करके पनघट पर जाती है। उनमें एक दूसरे से अच्छा लगने की प्रतिस्पर्धा होती रहती है। इसलिए औरतों की वेशभूषा पर ज्यादा लोकगीत है-

झम-झम करै सितारे दामण लाई डठोरे का।
सोड़-साड़ियां, दरी-गिडवा, तकिया लाई उस छोरे का।

ओ बालमा मेरी ला दे चून्दड़ियाँ, ओढ चुन्दड़ियाँ
मैं तो पाणि न गई थी ओ बालमा मेरे लागी नजरियों।[7]

आधुनिक समय ने औरते सलवार-जम्फर तथा दुपट्टा ओढ़ती है इनकी चर्चा भी आधुनिक लोकगीतों में है।

चुप-चुप का जम्फर लाई ए,
लप-लप की लाई सलवार।
चुगली का चुन्दड़ी लाई ए,
चुगली कर दिन-रात।

बीर तै मिलण गई थी ए,
ए सोने का सिमा लाई सूट।
सूट मेरा पहरण जोगा ए,
ए मेरा पति बसै प्रदेश।[8]

विविध वेशभूषा-

बाल-वेशभूषा, महिलाओं की वेशभूषा तथा पुरूषों की वेशभूषा के अतिरिक्त भी वेशभूषा होती है। इनमें फौजी की वर्दी, सिपाही की वर्दी तथा संत-महात्माओं का भगवा-बाणा आ जाता है।
संत महात्माओं का भगवा-बाणा दक्षिण हरियाणा के गीतों में-

गल म्ह माला बणी भगतणी।
भगवा ले लिया मेष-तन्मै।
हाय कृष्ण जी, हाय कृष्ण जी
कर लिया खड़ा कलेश तन्नै।[9]

दक्षिण हरियाणा में किसी भी परिवार में लड़का होता है तब जन्म से दसवें दिन को बड़ी धूम-धाम के साथ मनाया जाता है। इसी दिन जत्था की 'कुआँ-पूजन' की रस्म होती है। इसमें जच्चा पीलिया ओढ़कर कुआं पूजन के लिए जाती है तथा साथ में औरते गीत गाते हुए चलती है।

जच्चा का पीलिया- बच्चे के जन्म के अवसर पर पीहर से जो सामान भेजा जाता है उसे पीलिया कहा जाता है। दक्षिणी हरियाणा के लोकगीतों में पीलिया का ब्यौरा देखने को मिलता है।

पाँच मोहर का साहिबा पीलिया मंगाया जी,
कोई पाँच-पचीसी गढ़ बीसी पति प्यारे पिलिया मँगा दो जी, गढ़ मारूँ जी।
पीलिया तो ओढ़ म्हारी जच्चा पीढ़ा पै बैठी जी,
दौर-जेठाणी मुख मोड़ा जी, थम मेरी दौर-जेठाणी

मुखड़ा क्यूं मोड़ा जी, पीलिया मैंन राम ओढ़ाया जी।
पीला रंगा दो जी।
सासड़ का जाया ननदी का बीरा जी उन म्हारी
छेज पधारी जी, गढ़ मारू जी।
पीलिया तो ओढ़ म्हारी जच्चा पाणि नै चाली जी।
सारा ए शहर सराया जी गढ़ मारू जी।[10]

घुड़चढ़ी की वेशभूषा - लोक में विवाह के अवसर पर दूल्हा घोड़ी पर चढ़ता है जिसे घुड़चढ़ी कहा जाता है। दक्षिणी हरियाणा के लोकगीतों में इसका भी ब्यौरा देखने को मिलता है।

केला चमेली दोनूँ मखै कै पेड़ नीचै।
सेरा तो बाँधो रै बन्दड़ा टोपी पै ध्यान धर की।
केला चमेली दोनूँ मरवै कै पेड़ नीचै।
बुशर्ट तो पहनो रै बन्दड़ा बटणा पर ध्यान धर की।
केला, चमेली दोनूँ मरवै के पड़े नीचै।
पैंटा तो पहनो रै बन्दड़ा बैलटा पै ध्यान घर की।[11]

लोकगीतों में स्थानीय जीवन के रंग-बिरंगे चित्र उभरते है। इन गीतों में संस्कारों, पर्वो, उत्सवों, व्यवसायों के साधनों, सामाजिक, धार्मिक व पारिवारिक जीवन का चित्रण है। लोकगीत लोक परम्पराओं तथा लोक विश्वासों की अमूल्य निधि है इनमें जन-मानस की हृदय स्पर्शी भावनाओं का उद्रेक होता है। जीवन का ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है जहाँ इनका रंग न छिटका हो। भाव लोक की ऐसी कोई कन्दरा नहीं है। जहाँ इनका रंग न छिटका हो। जीवन के हर पहलू के दर्शन इनमें होते है। लोकगीत हमारी संस्कृति के धरोहर है। ये समूची संस्कृति के पहरेदार है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1.डॉ दीपिका मालिया : वस्त्राभूषण और लोकगीत, पृ. 5, 8, 60
2.जगदीश नारायण भोलानाथ शर्मा : हरियाणाा प्रदेश के लोकगीतों का सामाजिक पक्षु पृ. 53, 49
3.डॉ रेखा शर्मा : हरियाणा के लोकगीतों में भक्ति भावना , पृ. 31, 45
4.डॉ भीम सिंह : हरियाणा के लोकगीतों का सांस्कृतिक मूल्यांकन, पृ. 11
5.डॉ पूर्णचन्द शर्मा : हरियाणवी साहित्य व संस्कृति, पृ. 35
6.डॉ रीता धनकर: म्हारी रीत म्हारे गीत, पृ. 65
7.डॉ लालचन्द गुप्त मंगल: हरियाणा का लोक साहित्य, पृ. 43
8.डॉ. महासिंह पूनिया: हरियाणा की सांस्कृतिक धरोहर, पृ. 74
9.डॉ राजबीर धनक्ड़: हरियाणवी साहित्य में जीवन दर्शन, पृ. 24
10.डॉ. किरण ख्यालिया: म्हारे गीत म्हारी रीत, पृ. 10
11.डॉ महासिंह पुनिया: हरियाणा की सांस्कृतिक धरोहर, पृ. 34